प्रो.डॉ.धनराज चौधरी
एसोशिएट प्रोफेसर,
आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज,
ऊँझा (मेहसाणा) गुजरात

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में दलित नारी

समकालीन साहित्य के गलियारों में स्त्री एवं दलित विमर्श की व्यापक अनुगूंज सुनाई दे रही है परन्तु इन्हें उठाने और बहस का व्यापक मुद्दा बनाने वालों के वास्तविक निहितार्थ असन्दिग्ध नहीं कहे जा सकते। इन समस्याओं को लेकर वे कितने गम्भीर है ? यह बहस का विषय हो सकता है।

भारतीय जीवन में स्त्री युग-युगों से पुरुष के अधीन में मुक पशु की भाँति अपना जीवन व्यतीत कर रही है। नारी की इस स्थिति को पहचानकर विभिन्न समाज सधारकों ने अपनी ओर से नारी मुक्ति के लिये बडा प्रयास किया है। दलित नारी-उत्थान के लिये जिन महापुरुषों ने योगदान दिया है उनमे प्रमुख है - महात्मा गाँधी, ज्योतिबा फुले एवं बाबा साहब आंबेडकर। नारी अस्तित्व की रक्षा के लिये किये गये इन महापुरुषों के प्रयत्नों के फलस्वरुप नारी ने दलित आंदोलनों में भाग लेना भी प्रारंभ किया। लेकिन इस कार्य में उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। किन्तु विभिन्न आंदोलनों के मूल में नारी स्वतंत्रता ही निहित है। नारी समाज का उद्धार करके उन्हे समाज में समुन्नत स्थान देकर सिर उठाकर चलने के लिये प्रोत्साहन देना ही इनका उद्देश्य है।

यहाँ दलित नारी का तात्पर्य केवल निम्न वर्ग की नारी ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक रूप में उत्पीडित सभी वर्ग की नारी है। नारी जिस रूप में संत्रस्त, शोषित, पराश्रित तथा उत्पीडित है, दलित नारी कही जा सकती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों ने दलित नारी के परित्यक्ता, परतंत्रता, नारी शोषण, नारी मुक्ति की आकांक्षा, अत्याचार, अंधविश्वास एवं रूढिर्यां के विभिन्न रूपो को अपनी कविताओ में अंकित किया है।

नारी जीवन की नारकीय स्थिति को दलितावस्था कह सकते हैं। अविकसित क्षेत्रों की करुण कहानियों में नारी जीवन का ऐसा क्रन्दन छिपा है जिसकी आह से सारे समाज में एक प्रकार का भय, आतंक एवं परवशता व्याप्त होती चली जा रही है - इन सबके पीछे न जाने कितनी बिभत्स परिस्थितियों कायम हैं। सत्य को न्याय नहीं मिलता, आर्थिक विवशता का अंत अनाचार से होता है, साजिक बहिष्कार राजनीतिक मुद्दे आदि मुँह दबाएँ खडे है। इन्हे चाहिए साजिकता के दायरों को समझ सके और तद्नुरुप रह सकें।

नारी की समस्याएँ दिन प्रतिदिन बढने लगी। घर-बाहर दोनों कार्यो को संभालने का प्रभाव आधुनिक कविता पर पडा। स्वतंत्रता के पश्चात नारी की स्थिति को सुधार कर उसे सबला बनाने की दिशा में प्रयत्न किया गया। लेकिन नारी की स्थिति में ठोस परिवर्तन नहीं हुआ। उसका उत्पीडन वैसा ही रहा। देश की स्वतंत्रता के सडसठ लाल बाद भी नारी आज पूर्णत: स्वतंत्र नहीं हो पायी।

स्वतंत्रता के पश्चात नारी चेतना का जागरण अवश्य हुआ है। धीरे-धीरे वे अपने अधिकार एवं अस्मिता के प्रति जागरूक होती गयी है। उन्हे अपनी दयनीयता एवं हीनता का बोध जितना सालता है, उतना ही महानता एवं उच्चता के प्रति चेतित भी करता है।

"नारी गमले का एक पौधा है।"
जिन्हे नहीं मिलता खुला आकाश
जिसे फैलना है, दीवारों के भीतर।"[१]

नारी की असहायता एवं उसके उत्पीडन ने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों के हृदय को उदेलीत कर दिया है। नारी पर होने वाले अत्याचारों को देखकर कवि हृदय द्रवित हो उठा। नारी की विवश जिन्दगी का चित्रण करते हुए कैलाश वाजपेयी लिखते है -

"मेरा अस्तित्व किसी का आभारी है।
अजब लाचारी है
नारी....
उपस्थित है तब भी समस्या है
अनुपस्थित है तब भी समस्या।"[२]

अपने सम्मान को भूलकर भी परित्यक्ता अपने पति की भूल को नजर अंदाज करके उसके ही साथ जीना चाहती है। जिन पर किशोरीलाल लिखते है -

"फिर एक दिन तुमने अंतिम निर्णायक पत्र लिख दिया
तुम कुलटा हो, परित्यक्ता हो
केवल 'परित्यक्ता' लिखते तो मैं लडकर भी,
लेती मेरा अधिकार
पर तुमने कुलटा लिखकर दूध सट्टा कर दिया।"[३]

आगे परित्यक्ता पूछती है कि मैं पवित्र हूँ, कैसे निरूपित करूँ। पावनता को मापने के लिये कोई थर्मोमीटर नहीं है -

"मैं भला कैसे सिद्ध करती कि मैं पावन हूँ।

पावनता को मापने का कोई थर्मोमीटर तो है नहीं,
पावनता तो बस हृदय की माप है –
जब हृदय की आँखे गलत दिखाये ।
तो कौन यंत्र उसे सही सिध्द कर सकता है ।''[४]

निराला की पत्थर तोडती हुई नारी की तरह ही बहुत परिश्रम करके पैसा कमाकर परिवार का पोषण करने पर भी अपने पति के अधीन रहकर कष्टों को सहने के लिए तैयार मजदूर स्त्री का चित्रण करते हुए स्नेहमयी चौधरी लिखती है –

''धक्का देकर निकाली जाने पर भी वह
एक कोने में खडी हो गयी
बडा देर तक
बाहर या भीतर वापस जाने के
प्रश्न पर
विचार करती रही
फिर दिनचर्या की सक्रियता में
अपमान की किरच
अनेक परतों में जाकर छुप गयी ।''[५]

स्वतंत्रता पर्व हम हर वर्ष मनाते हैं, गीत गाते हैं, नारे लगाते है और धूम–धाम से दिवस मनाते हैं किन्तु स्थिति तो आज भी वैसी ही है, आज हो रहे नारी के अपमान पर किशोरीलाल व्यास लिखते है –

''द्रौपदी–सी पर्त दर पर्त,
नंगी होने लगी है ।
और उसे बचाने को कोई कृष्ण
कहीं नजर नहीं आता''[६]

नारी युग युगों से अभिशख्त है । वह पुरुष को जन्म देती है और उसका पालन पोषण करती है । हर पल पुरुष की सहायता करती है, किंतु नारी को पापी, ठगिनी, माया आदि नाम देकर पुरुष उसकी निंदा करता आ रहा है ।

''मैं नारी हूँ
कि मैं युगों की अभिशिप्ता हौआ हूँ ।
इंद्र द्वारा वंचित, गौतम की शापित अहल्या हूँ ।
मेरी कोख से परुष जन्मता हैं

मुझे कपडा सा पहनता है, ओढता है, बिछाता है,
मेरी गोद में सिर रखकर
रोता है, सोता है
तारे तोड लानेका साहस संजोता है।
पर मुझे माया-ठगिनी-त्रिया सी
समझता है।''[७]

हर क्षेत्र में अग्रसर होनेवाली नारी की दयनीय स्थिति इस कर्मभूमि पर जिस प्रकार है उसका मार्मिक चित्रण करते हुए कवि मु.ताजुद्दीन अहमद अपनी कविता 'नारी' में कहते हैं -

''उस.... नारी को
जगत जननी को
हाटों मे बेचते हैं
अपमान कर मुस्कुराते हैं
अपनी वासना मिटाते हैं,
मौका मिले तो....
गला घोट मार देते हैं।''[८]

नारी इस धरती पर पुरुष के आधिपत्य के कारण अपना अस्तित्व खो बैठी है। इस समाज के नरक में जलकर राख बन जाती है। -

''इस कर्मभूमि में नारी
दर - दर की ठोकरें खाती है
पल-पल नरकानल में
जल जल कर राख बनती है
अस्तित्व विहीन हो
अपेक्षिता बनी है नारी।''[९]

नारी युग-युगों से अपने अस्तित्व को भूलकर दीन, हीन रूप में दमित है। विभिन्न युगों से विनिमयवस्तु के रूप में बदल गयी है। जिन पर भीमशरण हंस की 'तोडनी होगी बेडियों' कविता की पंक्तियों देखिए-

''युग युगों से अपनी मर्यादा
और पहचान से अपरिचित
नारी ! तू कितनी हीन, कितनी दीन,

कितनी दलित है।
द्वापर हो या कलयुग
कुरान हो या पुराण
रामायण हो या महाभारत
हर कहीं तू मात्र एक वस्तु है
जो खरीदी जा सकती है,
बेची जा सकती है
लगायी जा सकती है जुए में
दाव पर।''[१०]

कभी कभी स्त्री का जीवन इतना मुश्किल हो जाता है कि स्नेहमयी चौधरी का हृदय द्रमित हो 'अपने खिलाफ' कविता में पुकार उठता है –

''जीना सचमुच मेरे लिये
अंगारो पर चलना हो गया है
हँसती मुस्कराती हुई मैं
अपनी ही निगाहों में दयनीय हो जाती हूँ।''[११]

'अभिशप्त शिला' कविता में अहल्या को दलित नारी के प्रतीक के रूप में लेकर नारी की करुण कहानी का वर्णन चंद्रिकाप्रसाद दीक्षित द्वारा इस प्रकार किया गया है –

''जननी ने ही जन्म दिया, धरती में जन को।
जन्म दायिनी की न जानता कोई पीडा।'' [१२]

युग–युग से स्त्री पुरुष का एकाधिपत्य सहन करती आ रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वह आज भी शोषण का शिकार बन रही है, जिसका प्रमाण प्रभाकर माचवे की 'अनक्षण' काव्य की निम्न पंक्तियाँ है –

''नये विधान बने धिस–धिसकर जबकि पुराने थे सिक्के
अपना वजन मूल्य खोकर के दर–दर खाते हैं धिक्को।''[१३]

'एक ताज है एक धूल' कविता में औरत औरत होती है उसकी कोई जाति नहीं है, न कोई धर्म। इस मत को रजनी तिलक स्वीकार नहीं करती। वह प्रश्न करती है कि –

''औरत औरत होने में जुदा फरक नहीं क्या
एक भंगी हो तो दूसरी ब्राह्मणी
एक डोम है तो दूसरी क्षत्राणी
दोनों सुबह से शाम खटती है

क्या एक–सी, सोती है
एक मुकमली बिस्तर पर
दूसरी काँटों पर ।''[१४]

इस संसार में शोषितों का और भी शोषण करते है और दलितों को और भी पीडा देते हैं । एक स्त्री भूख एवं अपमान से क्षुदित है तो दूसरी ओर अपने लिंग भेद की भूख से कैसे लडती है, इसका प्रमाण 'एक ताज है एक धूल' कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में दृष्टव्य है –

''प्रसव पीडा है दोनों एक सी
एक नाले के किनारे, दूसरी अस्पताल में....
औरत औरत में अंतर है
एक औरत पेशे से पायलट है दूसरी
शिक्षा से वंचित, शनिचरी
एक सत्ताशील है ।
दूसरी निर्वस्त्र कर धुमाई जाती है
एक ठकुरानी है तो दूसरी मेहतरानी ।
कहने को दोनों औरत हैं
एक ताज है एक धूल ।''[१५]

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों ने नारी मुक्ति की आकांक्षा प्रकट की । युग युग से पीडित नारी अपनी विद्रोह की भावना को यों प्रकट करती है –

''युग युग तक दु:ख सहा
न कुछ कहा
सूरज बुझा दूँगी में
घुंघटा जला दूंगी मैं
धीरज बाँध–बांधकर मैं जीती बाजी हारी थी
चार बूंदे ही आखिर मेरी कठिन कमाई थी
काजल से इतिहास के पन्ने
रंगा दूँगी मैं, ... ।''[१६]

स्वतंत्रता के बाद की नारी अबला के रूप में अपना जीवन बिताना नहीं चाहती, वह सभी क्षेत्रों में सबला बनने की कोशिश कर रही है । युगों–युगों से दबाकर रखी गयी नारी आज चिंगारी बन गयी है । वह अपने बंधनों को तोडकर आगे बढना चाहती है । 'करोडों पद चाप हूँ' में रजनी तिलक कहती है –

''मैं दलित अबला नहीं
नये युग की सूत्रपात हूँ
सृष्टि की जननी हूँ
मेरा अतित बंधनों का
गुलामी के इतिहास का
युग युगों से दमन का वहन है
अब मैं छोड दूँगी गुलाम गिरी
तोड दूँगी बेडियाँ।''[१७]

नारी को अपनी दलित अवस्था से मुक्ति पाने के लिये प्रोत्साहित करते हुए कवि कहते हैं कि नारीको अपनी बेडियाँ तोडनी होगी नहीं तो वह अपना अस्तित्व खो देगी।

''तोडनी होगी तुझे अपनी सारी बेडियाँ
और पाने होंगे अपने अधिकार
जो दिलाऊँ है तुझे अंबेडकर ने
शिक्षा, सत्ता और संपत्ति,
नारी सर्वत्र पूज्यते के छल में फँसी
यदि झुठलाती रहेगी तू
अपने अस्तित्व को तो
जारी रहेगा सिलसिला
तेरे दमन और दलन का
निरंतर तेरे चरित्र का हनन होगा
शील हरण होगा, अपहरण होगा,
सती की देवी हो या दहेज की आग
तेरा ही जिस्म जलेगा
त ही भस्म होगी।''[१८]

नारी सृष्टि की प्रतिनिधि है और संपूर्ण विश्व की जननी है। यह जानकर भी समाज उसे निम्न दृष्टि से देखता है। हर एक पुरुष को अपना जीवन बितानें मे स्त्री का साथ अत्यंत आवश्यक है, चाहे माँ, बहन या बेटी के रूप में –

''लिखे थे जो तुलसीदासने
रामचरित मानस में
ढोल गँवार शुद्र पशु नारी

सकल ताडना के अधिकारी
भर दिया जन मानस में
नारी केप्रति अलगाव / दुराव
यह जानते हुए भी
नारी उसकी माँ भी है
बहन भी पत्नी भी और बेटी भी
यह जानते हुए भी
नारी संपूर्ण विश्व की जननी और
संपूर्ण समाज का आधा हिस्सा है।''[१९]

विविध सामाजिक कुरीतियाँ एवं कुप्रथाओं के कारण नारी को चार दिवारों में बंदी बनकर रहना पडा। उसे इन दुराचारों के कारण पशु की भाँति शापग्रस्त एवं पापग्रस्त होकर रहना पडता है। वह जिंदा लाशके समान जीवन बीता रही है –

''पर्दो में बुर्को में, ऊँची–ऊँची दिवारों में
शींखचों में,
धार्मिक आचारों में
बाँध मेरे हाथ पैर, मन–बुद्धि
पशु–सा बिलबिलाने को,
छटपटाने का
पटककर चल देता है,
और मैं शाप ग्रस्त, पाप ग्रस्त
पाप की शिलाओं पर सिर पटकती हूँ –
लहुलुहान होती हूँ, भरती हूँ,जीती हूँ,
जीती हूँ, मरती हूँ।''[२०]

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में नारी की दलित अवस्था का यथार्थ अंकन हुआ है। नारी स्वतंत्र होने पर भी उसका उत्पीडन हो रहा है। इन कवियों ने नारी मुक्ति के लिये अपनी ओर से भरसक प्रयत्न किया। इस युग में मिथक के सहारे जैसे पौराणिक पात्र द्रौपदी, अहल्या आदि के माध्यम से वर्तमान कालीन नारी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

★ संदर्भ सूचि :

१. बारिश थम चुकी है, विद्या भंडारी (१९८९) पृ.९

२. वर्षगांठ, संक्रांत, कैलाश वाजपेयी, पृ. ५६

३. परित्यक्ता, अंधेरे उजाले के दीप, किशोरीलाल व्यास 'निलकंठ', पृ.२५

४. अंधेरे उजाले के दीप, किशोरीलाल व्यास 'निलकंठ', पृ.२६

५. पूरा लगत पाठ, स्नेहीमयी चौधरी, पृ.३०

६. १५ अगस्त १९८० के उपलक्ष्य में, अंधेरे उजाले के दीप, 'नीलकंठ' पृ.६

७. अंधेरे उजाले के दीप, किशोरीलाल व्यास 'नीलकंठ', पृ.१९

८. नारी / ताजुद्दीन अहमद, विवरण पत्रिका, अप्रैल, ९९,पृ. १९

९. वही

१०. भीमशरण हंस, तोडनी होगी बेडियाँ, दलित साहित्य १९९९

११. अपने खिलाफ, स्नेहमयी चौधरी, पृ. २२

१२. अभिशप्त शिला, चंद्रिका प्रसाद दीक्षित, पृ. ६४(१९८७)

१३. अनुक्षण, प्रभाकर माचवे, पृ. ७३ (१९७५)

१४. 'एक ताज है, एक धूल' रजनी तिलक, दलित साहित्य १९९९, पृ.२८४

१५. वही

१६. दूरचित्रवाणी २८ जुलाई १९७४, वीरेन्द्र शर्मा

१७. दलित साहित्य ९९, पृ. २८५

१८. तोडनी होगी बेडियाँ, भीमशरण हंस, दलित साहित्य ९९, सं.जय प्रकाश कर्दम

१९. शब्द और विचार, कर्मशील भारतीय दलित साहित्य, पृ. २६९

२०. अंधेरे उजाले के दीप, किशोरीलाल व्यास, 'नीलकंठ',पृ.१८

★ संदर्भ ग्रंथ :

१. स्त्री विमर्श: साहित्यिक और व्यावहारिक संदर्भ, डॉ.करुणा उमरे, अमन प्रकाशन, २००९

२. आधुनिक हिन्दी कविता में दलित नारी, डॉ.के.सुधा, अमन प्रकाशन, २०११

३. स्त्री अस्मिता के सवाल, डॉ. प्रभा दीक्षित, साहित्य निलय, २०११